समकालीन हिन्दी कविता में प्रेम की अभिव्यक्ति का वैविध्य

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा के अंतर्गत पीएचडी (हिन्दी) उपाधि हेतु
शोध प्रबंध की
रूपरेखा

शोधार्थी

शरद प्रताप

शोध निर्देशक

डॉ. बृजराज कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग (डी.ई.आई.)

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा 282005
2023

शोध विषय का परिचय :-

समकालीन शब्द अंग्रेजी के 'कंटेम्परेरी' का हिंदी अनुवाद है। 'सम्' उपसर्ग के साथ 'काल' और 'इन' प्रत्यय जोड़ने पर इस शब्द का निर्माण हुआ है जिसका अर्थ होता है, एक समय में होने वाला। समकालीन कविता जन आंदोलनों की कविता है। स्वतंत्रता के पश्चात जनता का मोहभंग होने से देश के कई हिस्सों में आंदोलन होना शुरू हो गए जिसमें से ही एक था सन् 1967 का बंगाल में 'नक्सलवाड़ी आंदोलन' और उसके बाद 1975 में आपातकाल इस तरह देश की जनता में घनघोर अवसाद और असंतोष व्याप्त हो गया। कवि अपनी कविताओं में हताशा और निराशा को अभिव्यक्त करने लगे। कविता मिथकों से मुक्त हो गई कवियों ने अपनी कविताओं में असाधारण, अद्वितीय और विशिष्ट को नकार दिया। समकालीन कविता का समय आपात काल के बाद का समय माना जाता है। सन् 1960 से लेकर सन् 1980 तक कविता विविध आंदोलनों से गुज़री है जिसमें विद्रोही पीढ़ी, श्मशानी पीढ़ी, युवा कविता, अकविता, प्रतिबद्ध कविता आदि प्रमुख आंदोलन रहे और इन्हीं आंदोलनों ने समकालीन कविता के लिए पृष्ठभूमि का कार्य किया। **आशुतोष कुमार** अपनी पुस्तक समकालीन कविता और मार्क्सवाद में लिखते हैं- “समकालीन कविता की चर्चा के क्रम में साठोत्तरी कविता, अकविता, युवा कविता, वाम कविता, प्रतिबद्ध कविता इत्यादि नामों से जुड़ी हुई और इन्हीं नामों से जानी गई कविताओं को छोड़ देना होगा इन तमाम प्रवृत्तियों की मुखालफत करते हुए ही समकालीन कविता ने अपनी 'वयस्कता' पाई है। इन्हें समकालीन कविता की किशोरावस्था नहीं कहना चाहें तो पृष्ठभूमि कह लें।” सन् 1980 तक आते-आते कविता में आंदोलनों का बाहुल्य कम होता नजर आता है। इस तरह अस्सी तक आते आते समकालीन कविता वादों के घेरों से मुक्त होकर अभिव्यक्ति देने लगी। सन् 1990 के आस पास जब भूमंडलीकरण और उदारीकरण से शहर केंद्रित विकास आरम्भ हो गया। सन् 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद नव उपनिवेशीकरण और बाजारवाद जैसी स्थिति उत्पन्न हुई। बाजारवाद और अर्थवाद के संक्रमण काल की स्थिति में भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों के प्रति संवेदनशील होना एक बड़ी चुनौती बन गई। बाजारवाद ने कमाई के जरिये तो खोले पर मूल्यों में क्षरण भी भारी मात्रा में हुआ जिससे समकालीन समय में धोखाधड़ी, दुर्घटनाएं, झूठ, फ़रेब आदि का बोलबाला हो गया, समकालीन कविता में ये समस्याएं बड़े पैमाने पर मुखरित होने लगीं। इस समय में यदि किसी व्यक्ति के साथ एक दिन में ये मूल्यहीन घटनाएं न हों तो आज के समय में उसके लिए वो एक आश्चर्य होगा। कुंअर नारायण अपनी कविता 'एक अजीब दिन' में इसकी अभिव्यक्ति भी करते हैं-

आज सारे दिन बाहर घूमता रहा
और कोई दुर्घटना नहीं हुई।
आज सारे दिन लोगों से मिलता रहा
और कहीं अपमानित नहीं हुआ।
आज सारे दिन सच बोलता रहा
और किसी ने बुरा न माना।
आज सबका यक़ीन किया
और कहीं धोखा नहीं खाया।
और सबसे बड़ा चमत्कार तो यह
कि घर लौटकर मैंने किसी और को नहीं
अपने को ही लौटा हुआ पाया।

इस तरह नब्बे के दशक तक आते-आते समकालीन कविता ने अपनी वयस्कता प्राप्त कर ली ।

'प्रेम' शब्द अपने आप में बड़ा व्यापक शब्द है। यह शब्द मूलरूप से संस्कृत के 'प्रेमन' शब्द से उत्पन्न हुआ है। जहाँ प्रेम को 'प्रीञ' धातु से मनिन' प्रत्यय करके सिद्ध किया गया है।इसके अनुसार प्रेम का अर्थ है-प्रेम होना, तृप्त होना, आनन्दित होना। वाचस्पत्य कोशकार ने इसकी व्युत्पत्ति 'प्रिय' शब्द से मानते हुए इसका प्रयागे सौहार्द, स्नेह एवं हर्ष के अर्थ में किया है। प्रेम वह शब्द है जिसमें जीवन छिपा है। जीने की चाह छिपी है कभी डर तो कभी निडरता छिपी है कभी बहुत प्रेम तो कभी घृणा छिपी है और प्रेम को समझते-समझते जिंदगी को समझने की अपने आप को समझने की कला छुपी है। डॉ. बच्चन सिंह ने प्रेम को परिभाषित करते हुए कहा है - "प्रेम वह अनुकूल वेदनीय मनोवृत्ति है जो किसी व्यक्ति अन्य जीव या पदार्थ के सौन्दर्य, गुण, शील, सामीप्य आदि के कारण उत्पन्न होती है।" प्रेम के स्वरूप को बताना एक कठिन कार्य है। प्रेम के विषय में रचनाकारों के मत कभी एक जैसे नहीं रहे । वे जिस तरह प्रेम को अनुभव करते हैं लिख देते हैं। जिस तरह कबीर प्रेम को गूंगे का गुड़ बताते हैं-

अकथ कहानी प्रेम की, कहत कहीं ना जाए,
गूंगे केरी सरकरा, खाय और मुसकाय।।

वैसे ही उर्दू फ़ारसी के प्रसिद्ध शायर मिर्ज़ा ग़ालिब प्रेम को सीने में लगी आग के रूप में व्यक्त करते हैं-

शायद इसी का नाम मोहब्बत है 'शेफ़्ता'
इक आग सी है सीने के अंदर लगी हुई

पिछले काल खंडों में कविताओं में प्रेम के विभिन्न स्वरूप सामने आए जिसमें भक्तिकाल का भगवत विषयक प्रेम हो या रीतिकाल का शुद्ध श्रृंगारी प्रेम या छायावाद का रहस्यवादी प्रेम हो। समकालीन कविता में इन सब का सम्मिलित स्वरूप मिलता है। समकालीन कवियों ने जिस तरह प्रेम को जिया या महसूस किया अपनी कविताओं में प्रेम का चित्रण भी बिल्कुल उसी स्वरूप में व्यक्तिगत ढंग से किया। फिर चाहे वो क्रोध, घृणा, दुःख, अवसाद, अकेलापन,

प्रतीक्षा, यातना, समर्पण या सम्मोहन के रूप में ही क्यों न हो। समकालीन कवि इतनी राजनीतिक हलचलों के वावजूद भी प्रेम कविता लिखते रहे। समकालीन कविता में मैं के स्थान पर हम का प्रयोग होने लगा था क्योंकि जो नियम व्यक्तिगत था वो सार्वजनिक लागू होने लगा है ।

कवि का ह्रदय एक प्रेमी का ह्रदय होता है और जब भी उसको देश दुनिया से अवकाश मिलता है वो प्रेम कविताएँ लिखता है। प्रेम कविता को लेकर राजेश जोशी ने अपनी पुस्तक 'एक कवि की नोटबुक' में लिखा है कि - "प्रेम कविता मनुष्य के मूल रागों का दमन करनेवाली स्थितियों का विरोध करती है।" प्रेम का हमारे जीवन में एक निश्चित स्थान होता है, जिसकी जगह कोई नहीं ले सकता चंद्रकांत देवताले अपनी कविता पुनर्जन्म में ये प्रश्न करते दिखते हैं कि उस वक्त यदि वहाँ प्रेम नहीं था तो क्या था -

बहुत मुश्किल है बताना
कि प्रेम कहाँ था किन किन रंगों में
और जहाँ नहीं था प्रेम उस वक्त वहाँ क्या था।

समाज संवेदना और अहिंसा दृष्टि के साथ ही कविताओं में मार्मिक और सूक्ष्म प्रेम संवेदना की अभिव्यक्ति हमें समकालीन हिन्दी कविता में देखने को मिलती है। समकालीन कविताएँ जो प्रेम को याद करते हुए लिखीं गई उनमें याद की बहुत गहरी और बहुत जीवंत अभिव्यक्ति हुई है। कुंवर नारायण की कविता 'जिसे बहुत पहले आना था' का ये अंश ह्रदय में एक दर्द भरी कौंध छोड़ जाता है -

सोचते-सोचते सो गया था एक गहरी नींद
जैसे अब सुबह न होगी
कि एक आहट से खुल गई आंखें,
जैसे वही हो दरवाज़े पर
बरसों बाद
जिसे बहुत पहले आना था।

समकालीन हिंदी कविता में प्रेम में प्रतीक्षा का अपना एक अलग महत्व रहा है। प्रतीक्षा प्रेम में सर्वोपरि है फिर चाहे वो प्रतीक्षा आलोक धन्वा की कविता 'छतों पर लडकियाँ' में उन नौजवान, बेरोजगार, नौकरीपेशा या लफंगों की हो जिन्हें इंतजार है -

लेकिन उन सभी के खून में
इंतजार है एक लड़की का
उन्हें उम्मीद है उन घरों और उन छतों से
किसी शाम प्यार आएगा।

या अशोक वाजपेयी की कविताओं में जिसमें समर्पण, सम्मोहन और प्रेम राग के रूप में जिसमें प्रतीक्षा का भाव सबसे

अधिक है उनकी कविता 'शेष' में वे प्रतिक्षारत हैं कि अंत में प्रेम बचेगा -

सब कुछ बीत जाने के बाद
बचा रहेगा
प्रेम...गर्मियों में सूख गए झरने की चट्टानों के बीच
जड़ों में धँसी नमी सा
बचा रहेगा
अंत में प्रेम

इसी तरह की प्रतीक्षा और आशा हमें पिछले काल खंडों में सूफ़ी कवियों में भी देखने को मिलती है बाबा फ़रीद की इन पंक्तियों में मिलन की आशा की प्रतीक्षा में प्रेम की कितनी दर्दनाक अभिव्यक्ति है -

कागा सब् तन खाइयो, चुन चुन खाइयो मांस।
दो नैना मत खाइयो, पिया मिलन कि आस।।

समकालीन समय में सयुंक्त परिवारों में कमी आयी और एकल परिवार की संख्या में वृद्धि हुई।आज की महंगाई में परिवार के एक सदस्य के कमाने से काम नहीं चलता तो स्त्री पुरुष दोनों काम पर जाते हैं। शाम को थकान लिए वापस आते हैं। सुबह फिर वही दिनचर्या ये दोहराव ही ऊब का रूप ले लेता है। और इस व्यस्तता में प्रेम गौण रूप ले लेता है जो बाद में विवाह-विच्छेद जैसी समस्याओं का कारण बनता है। आज के समय में मनुष्य शारीरिक रोग से ज्यादा मानसिक रोग से ग्रस्त है, खुशियों के पीछे भागते-भागते न जाने कब वह किसी मनोरोग क्या कुंठा का शिकार हो जाता है, पता नहीं चलता और इस कुंठा का प्रतिकार मात्र प्रेम है। मंगलेश जी अपनी कविता 'खुशी कैसा दुर्भाग्य' में लिखते हैं -

मनोरोग तुम फैलते जाते हो सेहत के नाम पर
खुशी कैसा दुर्भाग्य
तुम रहती हो इन सबके साथ

और इसी बीच प्रेम एक ऐसी जरूरत है जो इंसान को रहती ही रहती है जितना इंसान अकेला होता जा रहा है, उतनी ही प्रेम की आवश्यकता अधिक बढ़ती जा रही है। प्रेम मनुष्य की आत्मा की भूख है। आज के भागदौड़ वाले समय में जब प्रेम मात्र एक वस्तु बन गया है। इस असीम भौतिकवादी युग में प्रेम को बचाये रखना काफी आवश्यक हो गया है।

समकालीन कवियों की कविताओं में प्रेम के लिए एक छटपटाहट या पीड़ा महसूस की जा सकती है। कवि का हृदय प्रेम से परिपूर्ण है, पर उसे इस बात का डर है, कि संसार मे प्रेम खत्म हो रहा है और 'प्रेम की जगह सिंहासन पर विराजती

घृणा' विज्ञान ने दूरियाँ कम कर दीं आदमी चाँद तक पहुँच गया। पहले एक पत्र लिखते थे वो भी प्रेम से भरा हुआ आज फोन कॉल है पर वो भी नीरस दो लोग एक छत के नीचे रहते हुए भी अज़नबी सा महसूस करते हैं – 'दूरियाँ कम हो रही हैं लेकिन उनके बीच निर्वात बढ़ते जा रहे हैं' मंगलेश जी अपनी कविता 'फोन पर हालचाल' में दूसरे से प्रेम के अभाव का रोना रोते हैं और उधर से मात्र एक आवाज सुनाई देती है 'हाँ या नहीं'। आज कल जिस तरह स्त्री-पुरुष कमनीय त्वचाओं का आदान-प्रदान करते दिखते हैं उससे तो पता चलता है – 'प्रेम की एक परत का नाम है प्रेम' मंगलेश जी कविता में इस बात को स्पष्ट करते हैं कि एक कलाकार जितना बनाता जाता है अपनी कला से वह उतना ही ढहता जाता है -

तुम बार-बार मनाते रहे किसी रूठे हुए प्रेम को
देह को आत्मा और आत्मा को
देह की पुकार से भरते हुए
लेकिन कला में हम जितना बनाते-बनाते जाते हैं
उतना वह ढहता-ढहता जाता है।

समकालीन काव्य यातना से झूझता काव्य है जिसकी मंजिल प्रेम है और प्रेम की यह तलाश कभी खत्म नहीं होगी। आज के मशीनी युग में इंसान इतना जल्दबाजी में रहता है कि प्रेम भी उसको यथाशीघ्र ही चाहिए होता है, पर प्रेम तो एक भाव है जिसे पकने में समय लगता है। कुमार अम्बुज की कविता 'इस नई होती दुनिया में' विवाहित जीवन के कई स्तरों से गुज़रती हुई ये कविता प्रेम, ऐंद्रिकता, वासना, साहचर्य, संबंधों में उतार चढ़ाव अधूरे सपने की बेबाक और अद्वितीय रचना है प्रेमिका के स्पर्श और वासना में व्यक्ति की सारी ईर्ष्या और पशुता पिघल जाती है -

मैं नहीं आना चाहता था तुम्हारे स्पर्श की दुनिया से बाहर
और उस वासना से जिसके प्रकाश में गुम होते रहे मेरे द्वेष
जिसमें पिघलती रही मेरी ईर्ष्या मेरी पशुता।

प्रेम कुंठाओं, अवसाद, दुःख, अकेलापन, ईर्ष्या, यातना और पशुता आदि को खत्म करने की केवल औषधि है। प्रेम अकेले इन सब का प्रतिकार कर देता है, फिर भी जैसे जैसे प्रेम की आवश्यकता इस समय में बढ़ती जा रही है। वैसे वैसे बाजारवाद, वर्ग संघर्ष, शहरीकरण, उदारीकरण आदि के रहते प्रेम करना इस समय में बहुत कठिन होता जा रहा है। समकालीन हिंदी कविता में प्रेम के विविध स्वरूप सामने आते हैं। समकालीन कविता के जरिये प्रेमाभिव्यक्ति के वैविध्य को जानकर समकालीन समय में प्रेम को लेकर व्याप्त समस्याओं का सामाजिक संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन :-

स्नातक से शोधार्थी की रुचि समकालीन कविता की ओर है। समकालीन कविता नायकों की कविता न होकर चरित्रों की कविता है। यह जीवन प्रसंगों की कविता है। समकालीन कविता में विशिष्टता इतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितना विस्तार और विविधिता है। समकालीन समय में जब शोधार्थी ने अनुभव किया कि प्रेम में उल्लास जैसे खत्म ही होता जा रहा है। हर तरफ प्रेम में टूटन दुःख अकेलापन और ऊब ही देखने को मिल रही है, जो कि धीरे-धीरे बढ़ती ही जा रही है। और यह सब हमें समकालीन प्रेम कविताओं में दृष्टिगोचर होता है। इसके कारण और परिणाम खोजने तथा समाज पर इसके बढ़ते प्रभाव को जानने के प्रयास में मुझको इस विषय पर शोध करने की प्रबल इच्छा हुई मेरे शोध निर्देशक डॉ० बृजराज सिंह जी ने मुझे इस विषय पर शोध करने के लिए प्रेरित किया। इस वजह से मैंने "समकालीन हिन्दी कविता में प्रेम की अभिव्यक्ति का वैविध्य" को अपने शोध कार्य का विषय बनाया। साथ ही विषय से संबंधित सामग्री संचयन करने हेतु दयालबाग़ एजुकेशनल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में कई बार गया और वहाँ मैंने अध्ययन किया। साथ ही संचार के माध्यम इंटरनेट ने भी सामग्री संचयन में मेरी सहायता की। अपने अध्यापकों और विषय विशेषज्ञों से इस विषय पर चर्चा करने के उपरांत "समकालीन हिन्दी कविता में प्रेम की अभिव्यक्ति का वैविध्य" विषय पर शोध करने का निश्चय किया।

प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य :-

प्रस्तावित शोध विषय "समकालीन हिन्दी कविता में प्रेम की अभिव्यक्ति का वैविध्य" के अन्तर्गत समकालीन कविता के स्वरूप को जानना तथा समकालीन प्रेम के स्वरूप को विश्लेषित करने का प्रयास रहेगा। समकालीन कवियों ने प्रेम की व्याख्या अपने-अपने अनुसार की है इस शोध का एक उद्देश्य यह भी होगा कि विभिन्न समकालीन कवियों में तथा समकालीन समय में प्रेम का वैविध्य किस प्रकार है। समकालीन समय में व्याप्त विसंगतियाँ- कुंठा, अवसाद, दुःख, अकेलापन, ईर्ष्या, यातना, पशुता, वर्ग संघर्ष, बाजारवाद, उदारीकरण आदि से परिचित होना तथा प्रेम कविताओं पर इनका प्रभाव व प्रेम संबंधी समस्याओं को समझने समाज के सम्मुख रखने तथा निवारण करना इस शोध का उद्देश्य रहेगा।

प्रस्तुत शोध विषय का महत्व :-

समकालीन समय में व्यक्ति का जीवन एक जटिल संरचना की तरह हो गया है उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव में

आने की वजह से मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं का ह्रास हुआ है। इन्हीं मानवीय मुल्यों के साथ प्रेम के स्वरूपों में भी बदलाव दृष्टिगोचर होता है। इस शोध के माध्यम से हम समकालीन कविताओं के जरिये प्रेम के समकालीन स्वरूप को समझ सकेगें तथा समाज के संदर्भ में आज के समय में प्रेम के महत्व को समझ सकेंगे।

शोध विषय पर हुए पूर्ववर्ती शोध कार्य एवं शोध की मौलिकता :-

साहित्य सर्वेक्षण के दौरान मैंने विभिन्न संस्थानों एवं विभिन्न इंटरनेट साइट एवं शोधगंगा में प्रस्तुत विषय की खोज हेतु आंकड़ों का संकलन किया। इस दौरान शोधार्थी के शोध विषय के संदर्भ में कोई भी शोध कार्य प्राप्त नहीं हुआ। कोचीन यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी में केवल एक शोध कार्य "समकालीन हिंदी कविता में बदलते मानवीय संबंध : नब्बे के बाद की कविताओं के विशेष संदर्भ में" विषय पर अवश्य प्राप्त हुआ है। जिसमें मानवीय सम्बधों पर तो चर्चा की गई पर प्रेम के बारे में छुटपुट ही मिलता है। शोधार्थी का शोध विषय “समकालीन हिन्दी कविता में प्रेम की अभिव्यक्ति का वैविध्य” एक मौलिक शोध है, जिसमें समकालीनता के परिप्रेक्ष्य में प्रेम अभिव्यक्ति के वैविध्य का अध्ययन किया जाएगा।

शोधकार्य की प्रविधियाँ :-

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा समकालीन कविता में प्रेम की अभिव्यक्ति के वैविध्य का गहन अध्ययन किया जाएगा। साथ ही वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, तुलनात्मक, विवेचनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा, साथ ही पत्र-पत्रिकाओं, लेखकों के विचारों को भी अध्ययन का आधार बनाया जाएगा। शोधकर्ता द्वारा आधार ग्रंथ के रूप में उन्हीं कविता संग्रहों को लिया जाएगा जो 1975 ई. से 2010 ई. के मध्य प्रकाशित हुए हैं।

शोध कार्य की योजना एवं अध्याय विभाजन :-

समकालीन हिन्दी कविता में प्रेम की अभिव्यक्ति का वैविध्य

रूपरेखा

प्रथम अध्याय - समकालीन हिन्दी कविता : काल एवं अवधारणा

1.1 समकालीनता का अर्थ

1.2 समकालीन हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि

1.3 समकालीन हिन्दी कविता का समय

1.4 आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेमाभिव्यक्ति : एक सिंहावलोकन

1.4.1 स्वतंत्रता पूर्व की कविता

1.4.2 स्वातंत्र्योत्तर कविता

1.4.3 साठोत्तरी कविता

द्वितीय अध्याय – समकालीन हिन्दी कविता : विचार और प्रेम

2.1 समकालीन हिन्दी कविता में विचार

2.2 प्रेम एवं विचार का अंतर संबंध

2.3 प्रेम एवं परिवर्तन की आकांक्षा

2.4 स्वातंत्र्य चेतना एवं प्रेम

2.5 समकालीन जीवन मूल्य और प्रेम

2.6 समकालीन जीवन की विसंगतियाँ एवं प्रेम

तृतीय अध्याय – प्रेमाभिव्यक्ति का वैविध्य

3.1 वैश्विक कविता का प्रभाव

3.2 अस्सी का दशक और प्रेम कविता

3.3 नब्बे का दशक और प्रेम कविता

3.4 21 वीं सदी का प्रथम दशक और प्रेम कविता

चतुर्थ अध्याय – जनांदोलनों के मध्य प्रेम कविताओं का अस्तित्व

4.1 समकालीन हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि जनांदोलनों के संदर्भ में

4.2 जनांदोलनों का समकालीन हिन्दी कविता पर प्रभाव

4.3 1975 आपातकाल, जनांदोलन और प्रेम कविता

पंचम अध्याय – वैश्वीकरण : प्रेम और समकालीन हिन्दी कविता

5.1 उत्तर उपनिवेशवाद और प्रेम कविताएँ

5.2 भूमंडलीकरण का प्रेम कविता पर प्रभाव

5.2.1 उदारीकरण और प्रेम कविता

5.2.2 बाजारवाद और प्रेम कविता

5.3 फासीवाद एवं साम्प्रदायिकता का उदय तथा प्रेम कविताएँ

5.4 समकालीन हिन्दी कविता : भाषा एवं अभिव्यक्ति

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रंथ

संदर्भ ग्रंथ

पत्र-पत्रिकाएँ

साक्षात्कार

ऑनलाईन स्त्रोत

नोट:- शोध निर्देशक की सलाह एवं निर्देश से शोध रूपरेखा में 20 प्रतिशत परिवर्तन संभव है।

आधार ग्रंथ :-

1- आवाज भी एक जगह है, मंगलेश डबराल, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2004

2- इसी दुनिया में, वीरेन डंगवाल, नीलाभ प्रकाशन, संस्करण 1991

3- इस पौरुषपूर्ण समय में, कात्यायनी, परिकल्पना प्रकाशन, संस्करण 2008

4- इन दिनों, कुंवर नारायण, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2002

5- एक ही चेहरा, पंकज चतुर्वेदी, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2006

6- किवाड़, कुमार अम्बुज, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), संस्करण 1992

7- चाँद की वर्तनी, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2006

8- जहाँ थोड़ा सा सूर्योदय होगा, चन्द्रकांत देवताले, संवाद प्रकाशन मेरठ, संस्करण 2008

9- दो पंक्तियों के बीच, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2000

10- दुनिया रोज बनती है, आलोक धन्वा, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1998

11- दुःख तंत्र, बोधिसत्व, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण 2004

12- नये इलाके में, अरूण कमल, वाणी प्रकाशन, संस्करण 1996

13- नगाड़े की तरह बजते शब्द, निर्मला पुतुल, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण 2004

14- प्रतिनिधि कविताएँ, केदारनाथ सिंह, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण 1985

15- प्रतिनिधि कविताएँ, अशोक वाजपेयी, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण 1999

16- पुतली में संसार, अरूण कमल, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2004

17- पहली बार, संतोष कुमार चतुर्वेदी, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण 2009

18- भूमिकाएँ ख़त्म नहीं होती, हरीशचंद्र पाण्डे, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण 2006

19- लकड़बग्घा हँस रहा है, चन्द्रकांत देवताले, संभावना प्रकाशन हापुड़, संस्करण 1980

20- सब कुछ होना बचा रहेगा, विनोद कुमार शुक्ल, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण, 1992

21- सच सुने कई दिन हुए, बद्रीनारायण, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण 1993

22- स्त्री मेरे भीतर, पवन करण, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण 2006

23- शहर अब भी संभावना है, अशोक वाजपेयी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2004

24- हम जो देखते हैं, मंगलेश डबराल, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण 1995

सन्दर्भ ग्रंथ :-

1- समकालीन कविता और मार्क्सवाद, आशुतोष कुमार, शिल्पायन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, संस्करण 2010

2- एक कवि की नोटबुक, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2004

3- एक कवि की दूसरी नोटबुक समकालीनता और साहित्य, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2015

4- भूमंडलीकरण और समकालीन हिंदी कविता, डॉ. श्यामबाबू शर्मा, विकास प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2014

5- समकालीन हिंदी कविता, ए. अरविंदाक्षन, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली, संस्करण 1998

6- भूमंडलीकरण, ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र, प्रभा खेतान, सामयिक प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, संस्करण 2014

7- कविता और समय, अरुण कमल, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 1999

8- कवियों के बहाने वर्तमान पर बहस, डॉ. के.जी प्रभाकरन, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2015

9-हिंदी कविता अभी बिल्कुल अभी, नंदकिशोर नवल, राजकोट प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2014

10- आज की कविता, विनय विश्वास, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2009

11- पाब्लो नेरुदा : प्रेम कविताएँ, संपादक सुरेश सलिल, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2006

पत्र-पत्रिकाएँ :-

आलोचना

नया ज्ञानोदय

वागर्थ

हंस

सामाजिकी

ऑनलाईन स्त्रोत :-

http://inflibnet.ac.in

shodhganga.inflibnet.ac.in

http://hiwikipedia.org

http://booksgoogle.co.in